

शान्ति पाठ

(डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल कृत)

(हरिगीत)

हे शान्ति के सागर जिनेश्वर! शान्ति के ही रूप हो।
नासाग्रदृष्टि शान्त मुद्रा, स्वयं शान्तिस्वरूप हो॥
सारे जगत में शान्ति हो, सारा जगत यह चाहता।
किन्तु सारे जगत को, अपना बनाना चाहता॥ १ ॥
जबकि इक अणुमात्र भी, तो जगत में इसका नहीं।
अधिक क्या अणुमात्र को, अपना बना सकता नहीं॥
यह बात शाश्वत सत्य है, कोई किसी का रंच भी।
अच्छा-बुरा या अन्य कुछ भी, कभी कर सकता नहीं॥ २ ॥
मारना अर बचाना या, दुःख-सुख का दान भी।
कोई किसी का ना करे, आदान और प्रदान भी॥
यह बात केवलि ने कही, जिनशास्त्र में उल्लेख है।
जैन शासन में समझ लो, यह छठी का लेख है॥ ३ ॥
शान्ति और अशान्ति ये तो, आतमा के भाव हैं।
कोई किसी के क्यों करे, ये तो स्वयं के भाव हैं॥
रे स्वयं मिथ्या मान्यता को, बुद्धिपूर्वक छोड़ दें।
एवं स्वयं ही स्वयं में, निज आतमा को जोड़ दें॥ ४ ॥
शान्ति होती प्राप्त केवल, आतमा के ज्ञान से।
आतमा के ज्ञान से अर, आतमा के ध्यान से॥
यह ही परम सत्यार्थ है, यह ही परम भूतार्थ है।
और सब व्यवहार है बस, एक यह परमार्थ है॥ ५ ॥

व्यवहार से हम भावना, भाते सुखी संसार हो।
सुख-शान्ति चारों ओर हो, ना समृद्धि का पार हो॥
अनुकूलता हो सब तरफ, न आर हो न पार हो।
अधिक क्या अब हम कहें, बस सब सुखी संसार हो॥ ६ ॥

(दोहा)

सभी जीव इस लोक के, सुखी रहें सर्वत्र।
मौसम की अनुकूलता, बनी रहे सर्वत्र ॥ ७ ॥
प्राप्त करें सब जगत में, निज आनन्द अपार।
निज आत्म का ध्यान धर, आत्म शान्ति अपार ॥ ८ ॥

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

विसर्जन पाठ

(दोहा)

जो कुछ जैसी बन पड़ी, अपनी शक्ति प्रमाण।
हमने पूजन की प्रभो, अपनी भक्ति प्रमाण ॥ १ ॥
हमने जाना जो प्रभो, जिनवाणी का मर्म।
उसके ही अनुसार सब, यह व्यवहारिक धर्म ॥ २ ॥
इसमें जो कुछ रहीं हों, कमियाँ विविध प्रकार।
विधि के जाननहार जन, इसमें करें सुधार ॥ ३ ॥

(इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)
